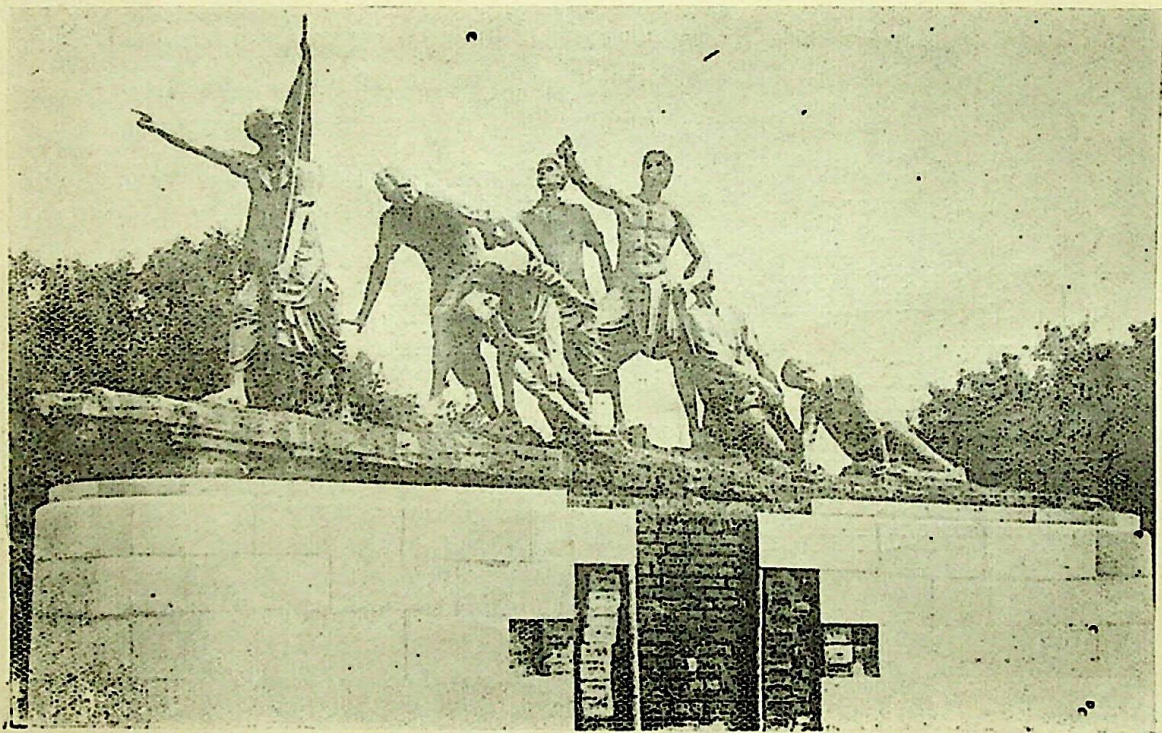


आज, बुधवार, दिनांक २४ अक्टूबर, १९५६ ई० के दिन, हम १९४२ ई० के राष्ट्रिय संघर्ष की उस घटना की स्मृति-रक्षा का आयोजन कर रहे हैं, जिसके क्रम में, हमारे सात वीर बालकों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी। ११ अगस्त, १९४२ ई० को, बिहार-सचिवालय के पूर्वी द्वार के समीप, एक विशाल जनसमूह के साथ, सचिवालय के प्राङ्गण में प्रवेश करने तथा उसके ऊपर राष्ट्रिय झण्डा फहराने का प्रयास करते हुए, उक्त सात बालक, उसी स्थान पर वृंशंस गोलियों के शिकार हुए, जहाँ उनका स्मारक बनाया गया है। इस सुन्दर स्मारक के द्वारा, हमारे तथा भावी पीढ़ियों के लोगों के मन में, न केवल उक्त सात वीरों के दुःखद निधन की स्मृति सदैव सजग रहेगी, बल्कि यह स्मारक देश की स्वाधीनता के निमित्त आयोजित वीरतापूर्ण संघर्ष में सज्जित अक्षय तरुणाई की भावना का मूर्तिमन्त प्रतीक भी होगा। साथ ही, इसके द्वारा देश की जनता के इस विश्वास एवं आस्था की भी अभिव्यक्ति होती है कि देश की शक्ति एवं समृद्धि के सृजन के जिस महान् कार्य में हम सम्प्रति संलग्न हैं, उसके सम्पादन में भी हमारे तरुण साहसिकता एवं दृढ़ता की भावना पूर्ववत् प्रदर्शित करेंगे और यदि कभी देश की स्वाधीनता के लिये, पुनः संघर्ष की आवश्यकता होगी, तो हमारी तरुणाई की वह भावना, एक नवीन गौरव के साथ प्रस्फुटित होगा।



शहीद-स्मारक का एक दृश्य

१९४२ ई० की क्रान्ति में बिहार का योगदान ❀

भारतीय स्वाधोनता के आन्दोलन में बिहार ने अत्यन्त महत्वपूर्ण उत्प्रेरक एवं सफल योगदान किया है। भारतीय राष्ट्रियता आन्दोलन के विभिन्न अध्यायों में, जब-जब देश की मुक्ति के निमित्त पुकार हुई, गौरवपूर्ण अतीत की पवित्र परम्पराओं से अनुप्राणित, इस ऐतिहासिक भूमि के प्रत्येक भाग के निवासियों ने आश्चर्यजनक सहयोग प्रदान किया। १८ वीं शताब्दी के मध्य से, जब राज-नीतिक क्रान्तियों के फलस्वरूप, भारत के भाग्य में एक नवीन परिवर्तन हो रहा था, १९ वीं शताब्दी के मध्य तक, देश की विकासोन्मुख ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध, यहाँ अनेकों प्रतिरोधात्मक आन्दोलन संघटित हुए। ब्रिटिश सत्ता के लिये एक महान् खूनौती-स्वरूप, सन् १९५७-५९ ई० के आन्दोलन में, बिहार के वीर बाँकुड़े कुँभर सिंह ने अपने अनुज अमर सिंह की सहायता तथा जनता के सक्रिय सहयोग से, इस राज्य में तथा राज्य के बाहर, विभिन्न स्थानों पर, प्रायः राष्ट्रिय संघर्ष किये और उक्त संघर्ष के प्रसंग में, उन्हें अमित आत्मोत्सर्ग भी करना पड़ा।

कांग्रेस के जीवन के प्रारम्भिक काल में, बिहार में, इसके सम्बन्ध में, बहुत उत्साह दृष्टिगत होता था और उसकी सभाओं में बहुत बड़ी संख्या में प्रतिनिधिगण सम्मिलित होते थे। बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी का संघटन पहले-पहल १९०८ ई० में हुआ था और, इसके तत्वावधान में, एक प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन प्रतिवर्ष होता था, जिसमें सदस्य तथा प्रतिनिधिगण के रूप में न केवल कांग्रेसजन भाग लेते थे, बल्कि अन्य ऐसे व्यक्ति भी सम्मिलित होते थे, जो प्रान्तीय हितसम्बन्धी विविध सार्वजनिक

* पटना विश्वविद्यालय के इतिहास-विभाग के अध्यक्ष डाक्टर कालि किङ्कर दत्त द्वारा लिखित

प्रश्नों के विषय में कांग्रेसजनों से सहमत रहते थे। १९०६ ई० में, बिहारो छात्र-सम्मेलन का जन्म हुआ। वह एक अद्वितीय संस्था थी और उसके द्वारा, विविध प्रकार से, राष्ट्रियता के विकास की सिद्धि हुई। १९१२ ई० में, जब बिहार-प्रान्त का निर्माण हुआ, भारतीय राष्ट्रिय कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन पहले-पहल बाँकीपुर में सम्पन्न हुआ। स्वर्गीय श्री सजहल हकस्वागत-समिति के अध्यक्ष थे और स्वर्गीय डा० सच्चिदानन्द सिंह प्रधान मन्त्री थे। उसके बाद, 'होम रूल'-आन्दोलन का प्रभाव भी यहाँ परिलक्षित हुआ।

चम्पारन-सत्याग्रह

बिहार-प्रान्त के चम्पारन जिले का क्षेत्र, अतीत काल से ही, ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने, चम्पारन जिले में, सर्वप्रथम भारत की नवीन राष्ट्रियता का सफल प्रयोग किया। इस प्रयोग की विशेषता यह थी कि इसमें सत्य और अहिंसा की मर्यादा, दलित जनता के उन्नयन, मानव-मानव के बीच संघर्ष उत्पन्न करनेवाली आर्थिक विषमता के निराकरण तथा समाज के परिष्कार पर विशेष ध्यान दिया गया। महात्मा गाँधी के उक्त प्रयोग के फलस्वरूप, चम्पारन की रैयतों को निलहों के चिरकालीन अत्याचारों से मुक्ति मिली और उनके मन में निर्भीकता एवं सत्यनिष्ठा के भाव विकसित हुए। इसका परिणाम यह हुआ कि कठिन-से-कठिन बाधाओं तथा विदेशी सरकार की क्रूरताओं के होने पर भी, उन्हें राष्ट्रिय स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करने की प्रेरणा मिली। साथ ही, इसके द्वारा साधारण जनता के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास-कार्य का भी श्रीगणेश हुआ। १९१६ ई० के सत्याग्रह, असहयोग तथा खिलाफत आन्दोलनों के काल में, बिहार की आत्मा अत्यन्त उद्वेलित हो गयी। उक्त महान आन्दोलनों के समय, बिहार की जनता ने जो बहुसंख्यक उत्सर्ग किये तथा निर्भीकतापूर्वक संघर्ष के साथ-साथ रचनात्मक कार्यों को जिस प्रकार आयोजित किया, उनकी गौरवपूर्ण गाथाएँ भारतीय राष्ट्रियता के इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षरों में अंकित की जायँगी। १९३०-३४ ई०

के सविनय अवज्ञा-आन्दोलन में भी बिहार ने प्रमुख भाग लिया। बिहार की जनता ने शासन-यंत्र के अत्याचारों के विरुद्ध वीरतापूर्वक संघर्ष किये। १९४०-४१ ई० के व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा-आन्दोलन में भी, बिहार ने तत्परता एवं उत्साह के साथ भाग लिया। २२ अप्रैल, १९४१ ई० को, ब्रिटिश संसद में, मि० एमरी ने जो वक्तव्य दिया और ६ सितम्बर, १९४१ ई० को मि० चर्चिल ने इस आशय की जो घोषणा की कि 'अटलांटिक चार्टर' भारत पर लागू नहीं था, उनके फलस्वरूप, भारत के अन्य भागों की तरह, बिहार में भी, व्यापक अविश्वास एवं असंतोष का उदय हुआ। पटना के जिला मैजिस्ट्रेट ने कमिश्नर को यह लिखा कि— "इंग्लैंड के प्रधान मंत्री के हाल के भाषण के कारण, भारतीयों में व्यापक असंतोष उत्पन्न हुआ है।" यह असंतोष दमन के फलस्वरूप और भी तीव्र हो गया और १९४२ ई० में एक विशाल संघर्ष की ज्वाला के रूप में प्रकट हुआ।

१९४२ ई० की क्रान्ति

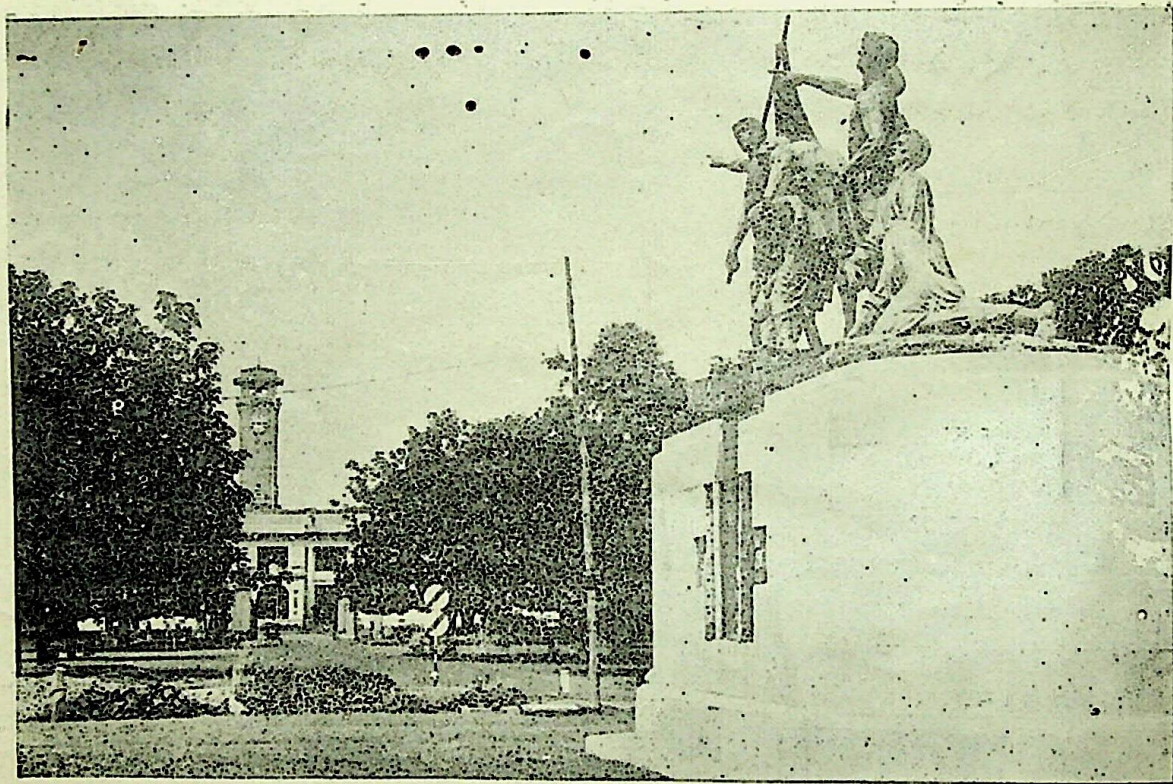
१९४२ ई० की क्रान्ति आधुनिक इतिहास के हृदयद्रावक आन्दोलनों में प्रमुख है। इस विशाल क्रान्ति के प्रसंग में, भारतीय स्वाधीनता की सिद्धि के लिए, जो महान संघर्ष किया गया, उसमें बिहार ने वीरतापूर्वक योगदान किया। उस अवसर पर, शासक-सत्ता के निर्मम दमनचक्र से सर्वथा अभभावित रहकर, यहाँ की जनता ने, अपने दृढ़ संकल्प एवं अदम्य उत्साह का अपूर्व परिचय दिया। इस प्रान्त के एक छोर से दूसरे छोर तक विदेशी साम्राज्यवाद के विरुद्ध इस महान राष्ट्रिय जागरण के फलस्वरूप, प्रेरणा की एक लहर-सी दौड़ गई और लोगों ने स्वतः आश्चर्यजनक सहयोग प्रदान किया। उन्होंने साहस के साथ कारावास के दंड का स्वागत किया और कठिन-से-कठिन यन्त्रणाओं का सामना करते हुए, देशहित के लिये अपार उत्सर्ग किये। बहुत-से लोग अपनी तरुणई में ही शहीद हो गये।

इस प्रकार, देश में जो घटनाएँ घटीं, उनके फलस्वरूप, क्रान्ति का पथ स्वतः प्रशस्त होता गया और देश में एकगम्भीर स्थिति उत्पन्न हो गयी। युद्ध के अयंर बादल उमड़ने लगे; सरकार ने राष्ट्रिय शासन की माँगों की बार-बार उपेक्षा की; और 'क्रिप्स योजना' के द्वारा देश का वैधानिक संकट हल होने के बदले, देशवासियों को गहरी निराशा ही हुई। ऐसे संकट की घड़ी में, भारत ने, बृटिश साम्राज्यवाद को एक साहसपूर्ण चुनौती दी; क्योंकि स्वतन्त्रता और जनतन्त्र की बारबार घोषणा करने पर भी बृटिश सरकार, भारत को, इन सुविधाओं से वंचित ही रखना चाहती थी। अतएव, भारत ने बृटिश सरकार से देश को छोड़कर चले जाने का स्पष्ट अनुरोध किया, ताकि, देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद के शब्दों में—'देशवासियों को, भारत पर प्रभुत्व जमाने की कोशिश करनेवालों के विरुद्ध, प्रतिरोध का अवसर मिले, चाहे वे बृटिश हों या जापानी।'

बिहार के राष्ट्रिय नेताओं ने अगस्त, १९४२ ई० के पूर्व ही, यह समझ लिया था कि देश का वातावरण बहुत गम्भीर हो गया है और सार्वजनिक विद्रोह की आग का भड़कना अनिवार्य है। वस्तुतः, उस वर्ष मई, जून और जुलाई के महीनों में बिहार-राज्य के विभिन्न भागों के भ्रमण के प्रसंग में किये गये अपने भाषणों के द्वारा उन्होंने इस प्रान्त की जनता को मनोवैज्ञानिक स्तर पर भावी संघर्ष के लिये पूर्णतः तैयार कर लिया था। बम्बई में अखिल भारतीय कांग्रेस श्री जो बैठक कांग्रेस कार्यसमिति द्वारा १४ जुलाई, १९४२ ई० को बाधा में स्वीकृत संकल्प पर विचार करने के लिये हुई, उसके पूर्व ही, देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद ने बिहार की जनता को उक्त संकल्प के अभिप्राय और महत्त्व से परिचित कराने के लिये आवश्यक कार्यवाई की। इसी उद्देश्य से, २१ जुलाई १९४२ ई० को बिहार-प्रदेश कांग्रेस-कार्य समिति की एक बैठक हुई। उस बैठक में कांग्रेस-कार्य समिति के पूर्वोक्त संकल्प का समर्थन किया गया। ३१ जुलाई, १९४२ ई० को प्रदेश कांग्रेस समिती की बैठक भी पटना में हुई। यद्यपि उस समय देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद अस्वस्थ थे, तथापि उन्होंने समिति की उक्त बैठक में बहुत ही जोशीला भाषण दिया, जिससे उस अवसर पर उपस्थित सभी व्यक्तियों को यह विदित हो गया कि अखिल भारतीय कांग्रेस समिती की बम्बई वाली बैठक में कांग्रेस एक महत्त्वपूर्ण निर्णय

करेगी। उक्त बैठक के दो-एक दिन बाद, अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के सदस्यगण तथा बिहार के अन्य कांग्रेसजन अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी की बैठक में सम्मिलित होने के अभिप्राय से बम्बई गये। देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद, अपनी अस्वस्थता के कारण बम्बई न जा सके। वे पटना में ही रहे।

समाचारपत्रों तथा अन्यान्य सूत्रों से यह पता चल गया था कि सरकार आन्दोलन आरम्भ होने के पृथ हो, बम्बई में सभी नेताओं को गिरफ्तार करने की तैयारी कर रही है, और पटना में भी पुराने कैमर जेल को, जिसका कुछ दिनों से उपयोग नहीं हो रहा था, पुनः राजनीतिक दंडियों के निवास के योग्य बनाया जा रहा था। देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद ने यह सोचा कि पूर्वोक्त परिस्थिति में जनता के समक्ष कोई कार्यक्रम न था। इसलिए, उन्होंने बिहार के लिए एक कार्यक्रम बनाने का निश्चय किया। उस समय पटना में सुलभ अपने कुछ साथियों के साथ विचार-विमर्श कर उन्होंने एक कार्यक्रम का प्रारूप तैयार करने का निर्देश किया; क्योंकि वे स्वयं अत्यन्त दुर्बल होने के कारण लेखन-कार्य करने में असमर्थ थे। उक्त सहयोगियों में श्री दीपनारायण सिंह, मंत्री, कांग्रेस कमिटी और श्री मथुरा प्रसाद, श्री कृष्णवल्लभ सहाय तथा श्री वेद्यनाथ चौधरी के नाम उल्लेखनीय हैं। देशरत्न ने उक्त प्रारूप को डा० अनुग्रह नारायण सिंह को भी दिखाया और उसके बाद, आवश्यक परिवर्तन कर, उसे स्वीकृत किया। उक्त कार्यक्रम को मुद्रित कराने का प्रबन्ध श्री सखोचन्द जायसवाल के द्वारा किया गया। किन्तु, उन्हें यह आदेश दिया गया कि वे उक्त कार्यक्रम को तत्तक गुप्त रखें, जबतक देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद अथवा उनके द्वारा अधिकारप्राप्त कोई अन्य व्यक्ति उसके प्रकाशन तथा प्रसार का आदेश न दें। संभवतः, अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के अंतिम निर्णय की प्रतीक्षा थी। यह भी निश्चय किया गया कि यदि सभी नेता गिरफ्तार हो जायें, तो जनता उक्त कार्यक्रम के अनुसार, आन्दोलन का संचालन स्वयं करेगी। महात्मा गांधी इस बात पर बार-बार जोर दे रहे थे कि इस संघर्ष में, स्वाधीनता की सिद्धि के लिये, सभी सुलभ उपायों का उपयोग अवश्य होना चाहिये, किन्तु किसी भी दशा में अहिंसा का परित्याग नहीं किया जाना चाहिए। पूर्वोक्त कार्यक्रम



शहीद-स्मारक का एक अन्य दृश्य

के प्रारूप में भी इस बात की चर्चा की गयी थी। उसमें सत्याग्रह की एक योजना का भी निर्देश था। यह सत्याग्रह, नूतन रूप में, उसके पहले आयोजित सत्याग्रहों से भिन्न न था, किन्तु उनकी अपेक्षा निश्चित रूप से अधिक शक्तिशाली था।

इस विषय में पहले जो आशंका हुई थी, वह सत्य सिद्ध हुई। दम्बई में, ५ अगस्त, १९४२ ई० को, कांग्रेस कार्यसमिति की एक बैठक हुई, जिसमें 'भारत छोड़ो' सम्बन्धी सुप्रसिद्ध संकल्प स्वीकृत हुआ। उक्त संकल्प द्वारा बड़े जोर के साथ, ब्रिटिश सरकार से यह मांग की गयी थी कि वह भारत छोड़ कर चली जाय। उसमें यह भी बताया गया था कि यह मांग भारत के लिये तथा संयुक्त राष्ट्र की सफलता के लिये आवश्यक है। भारत के स्वतन्त्रतासम्बन्धी अधिकार की पुष्टि के निमित्त, कार्यसमिति ने, अधिक-से-अधिक व्यापक रूप से, अहिंसात्मक जनसंघर्ष, महात्मा गांधी के नेतृत्व में करने का निश्चय किया था। उस संकल्प में, भारतवासियों से यह अपील की गयी थी कि वे साहस और धैर्य के साथ गांधी जी के नेतृत्व में, अनुशासनवद्ध सैनिकों की तरह, भारतीय स्वाधीनता की सिद्धि के लिये संघर्ष करें और इसके निमित्त जिन कष्ट-कठिनाइयों का सामना करना पड़े, उन्हें धैर्य के साथ भेलें, और वे यह अवश्य स्मरण रखें कि इस आन्दोलन का आधार अहिंसा है।

कांग्रेस कार्यसमिति के उक्त संकल्प पर, अखिल भारतीय कांग्रेस समिती ने, दम्बई में, ७ और ८ अगस्त १९४२ ई० को अपने ऐतिहासिक अधिवेशन में विचार किया और अत्यन्त अधिक बहुमत से वह संकल्प स्वीकृत हुआ। संकल्प स्वीकृत होने के बाद, उक्त अवसर पर, भाषण करते हुए महात्मा गांधी ने देश की जनता को 'करेंगे या मरेंगे' का मंत्र दिया। उन्होंने यह कहा कि हमलोग भारत को स्वतंत्र करेंगे अथवा इसी प्रयास में मर जायेंगे, किन्तु हमलोग अपनी दासता को कायम देखने के लिए कदापि जीवित न रहेंगे। उसी कारण से, गांधी जी ने यह भी बताया था कि संघर्ष आरम्भ करने के पूर्व मैं भारत के वाइसराय के नाम एक पत्र लिखूँगा और उनके उत्तर की प्रतीक्षा करूँगा, तथा यदि वे सहमत होंगे तो उनसे मिलूँगा।

पूर्वोक्त पत्र न लिखा जा सका; क्योंकि, ६ अगस्त, १९४२ ई० को प्रातःकाल बहुत सवेरे महात्मा गांधी तथा कांग्रेसकय-समिति के अन्य सदस्य गिरफ्तार कर लिये गये। उसके बाद, देश के सभी भागों में, उस दिन असंख्य गिरफ्तारियाँ हुईं। पटना में, जब देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद, रविवार, दिनांक ६ अगस्त को प्रातःकाल अँगरेजी दैनिक 'सर्चलाइट' में बम्बई की उक्त बैठक का समाचार पढ़ रहे थे, पटना के जिला मैजिस्ट्रेट, मि० डब्लू० जो० आर्चर लगभग दस बजे उनके समक्ष उपस्थित हुए। उन्हें अस्वस्थ देखकर जिला मैजिस्ट्रेट ने सशस्त्र से ऐसी स्थिति में आवश्यक आदेश की याचना की। उन्हें यह निर्देश मिला कि सिविल सर्जन से इस विषय में परामर्श करें कि वैसी परिस्थिति में देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद को किसी अन्य स्थान में ले जाना सम्भव था या नहीं। उनकी जाँच करने के बाद, सिविल सर्जन मेजर मर्डोक ने यह राय दी कि उन्हें दूर ले जाना सम्भव न था। उस समय, बहुत से दर्शक, जिनमें अनेक महिलायें भी थीं, सदाकत आश्रम में, देशरत्न के प्रति अपने सम्मान के भाव व्यक्त करने के अभिप्राय से उपस्थित हुए थे। लगभग १२ बजे दिन में, देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद, बाँकीपुर जेल पहुँचाये गये। उस अवसर पर, उन्हें बहुत-सो मालायें पहनायी गयीं और उपस्थित जनसमूह 'भारत छोड़ो', 'गांधी जी की जय', और 'राजेन्द्र बाबू की जय' के नारे लगा रहा था। श्री मथुरा प्रसाद और श्री चक्रधर शरण, जेल में, अपने अस्वस्थ नेता के निवास के लिये समुचित व्यवस्था करने के बाद, लौट गये। उसके कुछ काल बाद, श्री फूलन प्रसाद वर्मा गिरफ्तार होकर वहाँ आये उसी दिन लगभग स.द्वे-पाँच बजे सायंकाल श्री मथुरा प्रसाद भी गिरफ्तार कर लिये गये। अन्य प्रमुख नेताओं की गिरफ्तारी के लिये भी आवश्यक योजनाएँ तैयार कर ली गयी थीं। डा० श्रीकृष्ण सिंह, १० अगस्त, १९४२ ई० को प्रातःकाल अपने ग्राम 'झाडर' से पटना आने पर, उसी दिन तीसरे पहर ब्रजकिशोर-पथ स्थित श्री शार्ङ्गधर सिंह के निवास-स्थान पर, पटना के जिला मैजिस्ट्रेट, मि० आर्चर द्वारा गिरफ्तार किये गये। डा० अनुग्रह नारायण सिंह, ११ अगस्त, १९४२ ई० को अपने कदमकुर्तों स्थित निवास-स्थान पर गिरफ्तार किये गये।

बिहार काँग्रेस कमिटी का परिपत्र

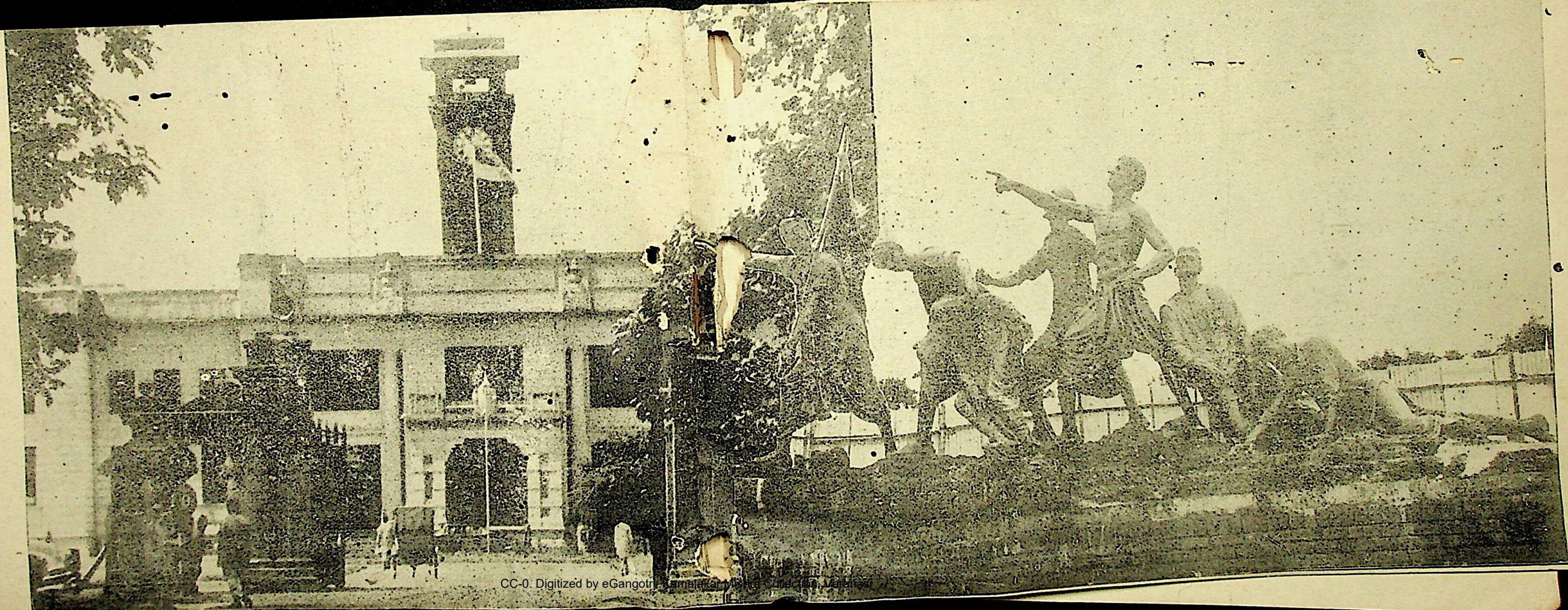
बिहार काँग्रेस कमिटी द्वारा प्रसारित परिपत्र संख्या १ की साइक्लोस्टाइल्ड प्रतियाँ प्रसारित की गयीं थीं। उस परिपत्र में, निम्नलिखित आशय के निर्देश अंकित थे:—

‘हो सकता है कि ब्रिटिश सरकार काँग्रेस को यह मौका न दे कि वह इस अहिंसात्मक असहयोग और सत्याग्रह को संगठित रूप से चला सके। इसलिए कुछ ऐसे संकेत यहाँ दिये जाते हैं कि यदि काँग्रेस के नेता गिरफ्तार हो जायँ तो लोग उनके अनुसार इस आन्दोलन को चलावें।

यह महात्मा गांधी के जीवन की आखिरी लड़ाई है, और स्वराज्य के लिए भी आखिरी लड़ाई है। यह किसी छोटे-मोटे उद्देश्य के लिए नहीं छेड़ी जा रही है। इसमें हिन्दुस्तान की आजादी के साथ सारे संसार का हित शामिल है; और इस भयंकर युद्ध को भी खतम करने की बात है। इसलिये, आशा की जाती है कि सभी हिन्दुस्तानी, जिनके दिल में देश के लिए प्रेम है और जो इसकी आजादी चाहते हैं, निःसंकोच शरीक होंगे। बिना त्याग के किसी देश को आजादी नहीं मिली है। हमेशा त्याग के लिये तैयार होकर इसमें शरीक होना है। जो देश इस लड़ाई में शरीक हैं, अपने खून को पानी की तरह बहा रहे हैं और अपने धन को समुद्र वा आग के हवाले कर रहे हैं। हम को एक ऐसे ही देश से आजादी लेनी है। वह त्याग से ही मिल सकेगी। यह हमेशा याद रखना चाहिए कि गांधीजी के इस असहयोग और सत्याग्रह का मूलमंत्र अहिंसा है। इसलिये, हम जो भी करें, उसमें अहिंसा को न छोड़ें और न कोई ऐसा काम करें, जो नीति के विरुद्ध अथवा सत्य के विरुद्ध हो। आशा की जाती है कि सभी कोटि के हिन्दुस्तानी इस यज्ञ में अपनी-अपनी आहुति अर्पित करेंगे और इसे ससम्पन्नता के साथ समाप्त करेंगे। गांधीजी अथवा काँग्रेस की ओर से जब-तक आदेश निकलता रहे, तबतक उसी के अनुसार काम होना चाहिए। यदि कोई आदेश निष्कालना अथवा पाना असम्भव हो जाय, तो नाँव लिखे मुताबिक काम करना चाहिए :—

- 1

पटना स्थित शहीद-स्मारक,
जिसका अनावरण भारत के राष्ट्रपति
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने, २४ अक्टूबर,
१९५६ ई० को किया।



आजादी की लड़ाई को सफल बनाने के उपाय

१. महात्मागांधी तथा अन्य नेताओं को गिरफ्तारी हो जाने के बाद, एक दिन की पूर्ण हड़ताल मनायी जानी चाहिए। इस हड़ताल में, व्यापारियों, विद्यार्थियों, वकीलों, मुख्तारों, मजदूरों, गाड़ीवानों, रिक्शावालों, सरकारी कर्मचारियों, जमींदारों, किसानों तथा अन्यान्य सभी वर्गों के लोगों को शामिल होना चाहिए। दिन भर की हड़ताल के बाद, संध्या-समय सभाएँ होनी चाहिए, जिनमें वही प्रस्ताव पास हो जिसको वर्किंग कमिटी ने, आल इंडिया कांग्रेस कमिटी के सामने पेश करने के लिये, ता० ५ अगस्त, १९४२ ई० को स्वीकार किया है और जो सब समाचारपत्रों में छपा है।

२. कार्यकर्ताओं को चाहिए कि घूम-घूम कर महात्मा गांधी और कांग्रेस के सन्देश लोगों को बतावें तथा उन्हें सब प्रकार के त्याग के लिये तैयार करें।

३. गांवों और शहरों में तमाम सभाएँ की जायँ और इल्लस निकाले जायँ। इल्लसों में स्वाधीनता के नारे लगाये जायँ और सभाओं में यह बताया जाय कि स्वाधीनता का अर्थ क्या है। अगर ब्रिटिश सरकार द्वारा सभा अथवा इल्लस पर रोक लगा दी जाय तो उसका लेहाज नहीं करना चाहिए।

४. वकीलों और मुख्तारों को वकालत और मुख्तारी छोड़ देनी चाहिए और सत्याग्रह प्रोग्राम को पूरा करने में उन्हें लग जाना चाहिए।

५. सभी विद्यार्थियों को स्कूलों और कॉलेजों से अलग हो जाना चाहिए और आजादी की लड़ाई के प्रोग्राम को पूरा करने में लग जाना चाहिए। इस लड़ाई में विद्यार्थियों से बड़ी आशा की जा रही है और उम्मीद है कि वे लोगों की आशा की पूरा करेंगे।

६. पुलिस भाइयों से अपील है कि वे देशवासियों के ऊपर, जो आज देश में लगे हों, लाठी या गोली नहीं चलायें।

७. कार्यकर्त्ताओं को चाहिए कि यदि उनके ऊपर लाठी चले या गोली भी चले तो उसे वे बंहादुरी से बर्दाश्त करेंगे। वे पीछे कदम हर्गिज न उठावेंगे और अहिंसा को कभी न छोड़ेंगे।

८. लोगों को चाहिए कि चौकीदारी या म्युनिसिपल टैक्स देना बन्द कर दें। चौकीदार और दफादार भाइयों से अपील है कि वे सरकारी नौकरी छोड़कर देश का साथ दें।

९. पुलिस भाइयों और जेल वार्डों से अपील है कि वे शीघ्र अंग्रेजी सरकार की नौकरी छोड़ दें। इनके माफ़त सरकार वह कुकर्म करावेगी कि जिससे देश का बड़ा नुकसान होगा। कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं के ऊपर लाठी या गोली चलाने के लिये ये लोग मजबूर किये जायेंगे। इस पाप से बचने के लिए वे सरकारी नौकरी छोड़ दें, तो अंग्रेजी राज्य का बहुत बड़ा पाया टूट जायगा।

१०. सभी सरकारी कर्मचारियों से अनुरोध किया जाता है कि वे पदत्याग कर दें।

११. रेलवे के कर्मचारियों, स्टीमर पर काम करनेवालों, डाकघर में काम करनेवालों, कोयले की खानों तथा जमशेदपुर के कारखानों के मजदूरों से अनुरोध किया जाता है कि वे अपने काम छोड़ दें।

१२. जो अपनी नौकरी कांग्रेस की पुकार पर छोड़ देंगे, उनको स्वाधीनता के बाद फिर पूरे वेतन के साथ नौकरी मिल जायगी। ऐसे लोगों को, जिनकी जमीनों और मकानों को सरकार उनके सत्याग्रह में भाग लेने की वजह से नीलाम या कुफ़ कर दे, तो, उनके सत्याग्रह में भाग लेने की वजह से, स्वाधीनता के बाद उनकी जमीनों और उनके मकान वापस किये जायेंगे।

१३. स्वराज्य-संग्राम में सहायता देने के लिये, काफी गल्ला पैदा करावे के लिये तथा लोगों के जान-माल की रक्षा के लिये ग्राम-पंचायत का संघटन होना चाहिए।

स्वराज्य की लड़ाई की सूचनाएँ नाराज़ मिलती रहें। इसका भी प्रबन्ध करना चाहिए। हर इलाके के कार्यकर्त्ता नियत समय पर और निश्चित स्थान पर किसी-न-किसी तरह सम्वाद पहुँचा दिया करेंगे।

१५. सरकारी मकानों पर राष्ट्रिय झंडा फहराना चाहिए और कर्मचारियों को आजादी की लड़ाई में सम्मिलित होने के लिये कहना चाहिए। पुलिस के हथियारों को लेकर किसी सुरक्षित स्थान में रखना चाहिए। सरकारी कार्यालयों को बन्द कर देना चाहिए और घोषित कर देना चाहिए कि सरकारी कर्मचारी स्वतंत्रताप्राप्ति के वाद पुनः जुला लिये जायेंगे।

१६. सत्याग्रह के युद्ध में छिपकर किसी का कोई काम नहीं करना चाहिए। छिपने से युद्ध और कमजोर हो जाता है। इसलिये, सभी कामों को पहले ही घोषित करके करना चाहिए।

इस कार्यक्रम के प्रसारित होने से संघर्ष की गति बहुत तीव्र हो गयी।

पटना जिले के सभी भागों में, कुछ स्थानों पर, स्वतः, हड़तालें मनायी गयीं, जुलूस निकाले गये और राष्ट्रिय झण्डे फहराये गये। ११ अगस्त, १९४२ ई० को लगभग ६ बजे प्रातःकाल, पटना मेडिकल कालेज के मैदान में राष्ट्रिय झण्डा फहराया गया। पटना सिटी के क्षेत्र में, एक विशाल जुलूस ने अदालत के अहाते में प्रवेश किया और एस० डी० ओ० के इजलास को छत के ऊपर राष्ट्रिय झण्डा फहराया। गुलजारबाग कुटीर उद्योग प्रतिष्ठान के अहाते में, प्रतिष्ठान के भवन पर राष्ट्रिय झण्डा फहराने का प्रयास करी हुए, १२ आदमी गिरफ्तार किये गये। दानापुर में, श्री सीताराम केसरो और श्री हरेकृष्ण सिंह के नेतृत्व में, एक जुलूस निकला; किन्तु, पुलिस ने उसे, लड़ो-प्रहार के द्वारा, छावनी की ओर जानेवाली सड़क के पुल के समीप, तितर-बितर कर दिया। इसी प्रकार, खगौल में भी, पुलिस द्वारा, एक जुलूस को तितर-बितर किया गया और वहाँ १२ आदमी गिरफ्तार हुए। फतुहा, यक्षियारपुर और बाढ़ में भी जुलूस निकले और इन स्थानों में कुछ लोग गिरफ्तार भी हुए। यक्षियारपुर रेलवे-स्टेशन पर वहाँ के तीन स्वयंसेवक गिरफ्तार हुए। बाढ़ में, जुलूसवालों ने एस० डी० ओ० के इजलास के ऊपर राष्ट्रिय झण्डा फहराया और पुलिस